आपने लिखा

शैक्षणिक संदर्भ अंक 94 प्राप्त हुआ। इस अंक को एक ही बैठक में पूरा पढ़ डाला। सच में इस प्रकार की सामग्री को पढ़कर आनन्द आता है। पुनः पूर्व अंकों की भाँति यह भी संग्रहणीय है। अंक की सभी रचनाएँ उम्दा और सारगर्भित लगीं। इनमें जो सर्वाधिक प्रिय लगीं, वे हैं – क्या समझ से पढ़ना बच्चों को.... (कीर्ति जयराम), सर! आपने तो अपना परिचय दिया ही नहीं (केवलानंद काण्डपाल) और भोजन की थाली से (मोहम्मद उमर)।

पत्रिका में खास तौर पर आनन्द निकेतन डेमोक्रेटिक स्कूल, भोपाल से सम्बद्ध श्री अनिल सिंह का आलेख 'बोलचाल की भाषा और मुहावरे' कक्षा शिक्षण की प्रक्रियाओं को बेहतरीन बनाने की दिशा में बहुत उपयोगी लगा।

कक्षा शिक्षण की प्रक्रियाओं को समृद्ध बनाने के लिए इस प्रकार की सामग्री का चयन कर प्रकाशित करना 'संदर्भ' की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। लेखक ने बहुत ही सहज और सरल तरीके से आलेख की बुनावट की है, जिससे पढ़ने के दौरान ऐसा महसूस होता है कि मैं भी अनिलजी की कक्षा का एक विद्यार्थी हूँ और मुहावरों का प्रयोग करना सीख रहा हूँ। मुझे लगता है कि कठिन लगने वाली हिन्दी व्याकरण को बहुत आसानी से बच्चों को समझाया जा सकता है। बस ज़रूरत है इस प्रकार की दृष्टि और सोच की ताकि शिक्षण को खेल और कला के ज़रिए बच्चों तक पहुँचाया जा सके।

आज के दौर में हमें सही दिशा देने में 'शैक्षणिक संदर्भ' एक अच्छा किरदार अदा कर रही है। मेरी दिली तमन्ना है कि यह पत्रिका शिक्षा जगत से जुड़े ज़्यादा-से-ज़्यादा व्यक्तियों तक पहुँचे और इसे ज़्यादा-से-ज़्यादा लोग पढ़ें ताकि हम सभी बेहतर शिक्षा के मायने समझ सकें। एक बार पुनः सभी लेखकों और 'संदर्भ' टीम को सुन्दर प्रयास के लिए बधाई।

सिद्धार्थ कुमार जैन
अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन,
भोपाल, म.प्र.

संदर्भ अंक 94 बहुत कुछ नया सिखाता है। सबसे पहले तो इसका मुखपृष्ठ। यह अपने आप में कला का एक संसार सामने रखता है। भले ही मुखपृष्ठ के चित्र का शीर्षक 'विकृत आकृति' हो लेकिन हमें तो यह 'सुकृत आकृति' से कम नहीं लगा।

श्री विवेक मेहता ने जेम्स बॉण्ड की दौड़ को स्नेल्स लॉ से जिस ढंग से जोड़ा है वह भी बहुत कुछ सिखा जाता है। वैसे उसमें दिया गया गणित हमारी क्षमता से ऊपर का है। फिर भी खूब मज़ा आया।

'संदर्भ' टीम को बधाई।

अनुपम मिश्र
गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान,
नई दिल्ली

संदर्भ जबसे मुझे मिल रही है तब से उसका प्रत्येक अंक मैंने पढ़ा है और मुझे यह पत्रिका काफी पसन्द है। यह केवल मैं नहीं बोल रहा हूँ, कई शासकीय शिक्षकों के माध्यम से भी सुनने को मिल रहा है। इन दिनों शनिवार को होने वाली अकादमिक

चर्चाओं में भी केन्द्र बिन्दु में 'संदर्भ' ही होती है और इसे बेहद पसन्द किया जा रहा है। संकुल - सम्बलपुर (विकास खण्ड धमतरी, छत्तीसगढ़) में सम्पन्न सेवा कालीन प्रशिक्षण में हमें भी एक अवलोकनकर्ता की तरह शामिल होने का मौका मिला था।

शिक्षकों का 'संदर्भ' के प्रति काफी सकारात्मक विचार है। पिछले अंक में 'पूरी क्यों फूलती है?' जैसे विज्ञान-सम्मत प्रश्नों का उत्तर शिक्षकों के लिए जीवन्त आलेख सिद्ध होता हुआ दिख रहा था जब अकादमिक चर्चा में शिक्षक ने यह कहा कि "मैं 'संदर्भ' में छपे आलेख के आधार पर कह रहा हूँ।" यह काफी प्रेरणा देता है कि शिक्षक को ध्यान में रखते हुए लेख प्रकाशित किए जाते हैं। अंक-95 में सवालीराम कॉलम 'चन्द्रमा छोटा और बड़ा क्यों होता है?' काफी लाभकारी सिद्ध हुआ। इस तरह चन्द्रमा पर आधारित विभिन्न जानकारियाँ लगातार दी जानी चाहिए।

'संदर्भ' में 'शिक्षकों की कलम से' एक बेहतर प्रयास शुरू किया गया है। इसके तहत लेख 'सात पूँछ का चूहा', 'नक्शों पर नज़रिया' और 'पत्तियों पर कार्यशाला' काफी लाभकारी सिद्ध होंगे।

पिछले दो अंकों में पठन कौशल पर लाभकारी आलेख थे, इस क्रम को लगातार जारी रखा जा सकता है। 'संदर्भ' के अतुलनीय प्रयास प्रशंसनीय हैं।

नरेन्द्र साहू
अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन,
धमतरी, छत्तीसगढ़

विनम्र अनुरोध है .....

'संदर्भ' के अंक 95 के साथ एक प्रश्नावली भी भेजी गई थी।

इस प्रश्नावली में 'संदर्भ' को लेकर आपकी राय जानने की कोशिश की गई है। आपकी प्रतिक्रिया से हमें 'संदर्भ' को और बेहतर बनाने में मदद मिलेगी।

कृपया अपने अमूल्य समय में से कुछ समय निकालकर प्रश्नावली को भरकर भेजने की ज़रूर कोशिश करें।

– संदर्भ टीम